सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 29-30
अंक – 107 | अगस्त– 2011

।। ॐ।।

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः ।।

।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ।।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

संकल्प प्रार्थना – दैनंन्दिन प्रार्थना – सामुहिक प्रार्थना

आज जगत में काफी लोग देव–देवताओं की उपासना करते हैं। हम भी इस गुरूमार्ग में आने से पहले कोई न कोई देवताओं की उपासना करते थे। इस उपासना का कारण यह था कि हमारी तकलीफें दूर हों और हमें सुख–शांति–समाधान की प्राप्ति हो। लेकिन यह प्राप्ति होने के लिए आज हमें यह भी पता नहीं कि कौनसे देवता हमारी तकलीफें दूर करके हमें सुख–शांति–समाधान का लाभ पहुँचा सकते हैं। यह प्राप्ति होने के लिए पूवजनों ने/ऋषी मुनियों ने हमारे कुल देवताओं की प्रतिष्ठापना की थीं। हमारे कुल स्वामी और कुल स्वामिनी, पिता और माता के समान होते हैं और हमारे जीवन सुख–शांति–समाधान से व्यतीत हो इसका पूरा उपाय उनकी उपासना में होता है; जो कि इस यंत्र–मंत्र द्वारा सिद्ध किया होता है। लेकिन आज हम अपना कुलधर्म कुलाचार, कुलोपासना भूल गए हैं। इतना ही नहीं तो हम में से कई लोगों को यह भी पता नहीं कि हमारे कुल देवता कौन से हैं। आजकल हम उपास्य देवताओं की पूजा करते हैं, मतलब श्री गणेश, श्री शंकर, श्री विष्णु जी इत्यादि। वास्तविक उपास्य देवताओं की स्थापना इसलिए नहीं हुई है, तो जब मनुष्य के जीवन में कुल देवता के कृपाशिर्वाद से सुख–शांति–समाधान प्राप्त होता है तब जीवन साकार करने के लिए, इस विश्व के लिए अपने जीवन का कुछ उपयोग हो इस भावना से वह मनुष्य, मूलभूत त्रिगुणात्मक शक्ति के एक या दो तत्व जिस उपास्य देवता में प्रधान हैं उस उपास्य देवता की पूजा करने लगता है। आज हमें यह भी ज्ञान नहीं है कि कौन से देवता से क्या मांगना है और कैसे प्राप्त करना है। देवता की उपासना अगर सफल हो गई तो एक क्षण ऐसा आयेगा कि शक्ति आह्वानित होकर सामने आयेगी और उसी क्षण हमें उसका विनियोग कैसा हो इस हेतु और उसकी तैयारी स्पष्ट करनी होगी। इसे ही संकल्प कहते है। अगर संकल्प तैयार नहीं है तो आह्वानित हुई शक्ति हमें और हमारे कुटुम्ब का जीवन नष्ट कर सकती है। इसीलिए आज के दिन सबसे सुलभ मार्ग है गुरूमार्ग।

हमारे इस गुरूमार्ग में वं. दादा जी ने शक्ति का आह्वाहन कई हिस्सों में किया और हर एक बार उसे नया संकल्प दिया तभी शक्तिपीठ की स्थापना हो पायी है।

हमारे जीवन में कई तरह की तकलीफें थी। इस गुरूमार्ग का लाभ लेने के बाद काफी तकलीफें दूर हुई और हमें सुख–शांति–समाधान का लाभ हुआ। अब हम इस गुरूमार्ग में संतुष्ट हो गए और अपने समय के इस कार्य का लाभ लेने लगे। लेकिन हमारे जीवन में सुख–शांति–समाधान का लाभ होना यहीं तक इस शक्तिपीठ का कार्य सीमित नहीं है। जैसे हमारे घर में अंधकार या, रोशनी की ज़रूरत थी, गुरूमार्ग में आकर घर में बिजली आ गई तो हम खुश हो गए। लेकिन सिर्फ इस गुरूमार्ग में आने वाले भक्त के घर में भी बिजली हो यह पर्याप्त नहीं। हमें लगता है कि महीने में तीन सौ युनिट की बिजली हमारे घर में लगती है तो गुरू मार्ग से वह प्राप्त हो गई लेकिन यह बिजली देने के लिए वं. दादा जी ने तीन सौ युनिट का काम नहीं किया बल्कि जो नदी पहाड़ों के बीच में से गुजरती है वहाँ दो पहाड़ों में दीवार खड़ी कर दी जिससे करोड़ों लोगों के घर में बिजली जा सके वह काम किया है। इसमें हमारे घर में बिजली मिलने के बाद हमारे जीवन का काम शुरू होता है। वं. दादा जी को इलेक्ट्रिसिटी टॉवर बनाना है जिससे आसपास के प्रदेश में हमारे माध्यम का उपयोग करके श्री गुरू बिजली पहुँचा सके। यही सेवक की अवस्था है।

शक्तिपीठ की स्थापना करने से पहले जब सेवक अवस्था सिद्ध करने की तैयारी चल रही थी तब हमारे जैसे सामान्य मानव जो अपने जीवन के दोषों से परेशान हुए हैं, उन्हें दिलासा देकर, गुरूकृपाशीर्वाद देकर धीरे–धीरे उनके दोषों का विमोचन किया फिर दीक्षाएँ दी और उन्हें सिद्ध किया। तब हर एक विमोचन और दीक्षा देते समय शक्ति का आह्वान किया और उसे संकल्प दिया। इन संकल्पों की और उसकी साधना की रूपरेखा श्री साईनाथ महाराज और दत्त–नाथ और सुफी पंथों की दिव्य पूण्य विभूतियों ने किया।

कार्य के आरम्भ के समय करीब–करीब पच्चीस प्रसाद (श्रीफल) पूजन के लिए एक के बाद एक ऐसे दिये जाते थे। शक्ति धारणा के लिए भक्तों का माध्यम तैयार नहीं था और शक्ति भी इहलोक में स्थित नहीं थी इसलिए शक्ति का आह्वान करके वं. दादा जी प्रसाद (श्रीफल) पूजन के लिए देते थे। अलग–अलग प्रसाद के लिए अलग–अलग संकल्प होते थे। पहला प्रसाद कुल देवताओं का ऋण पूरा करने के लिए, पिछले 3–4 पिढ़ीयों में जो कुलाचार, कुलोपासना और कुलधर्म का पालन नहीं हुआ, उसके लिए। दूसरा प्रसाद उनको जिनका हित सम्बन्ध ग्राम देवताओं से था। मतलब पालखी (देवी की) उठाना, मशाल जलाना इत्यादि, इत्यादि। तीसरा प्रसाद कुल देवताओं की कृपा जोड़ने के लिए, मतलब पहले प्रसाद से ऋण तो मिटा दिया लेकिन जब तक कुल देवताओं की कृपा नहीं होगी, उनकी मान्यता नहीं होगी तब तक आगे का विकास नहीं होगा। इसके बाद वंश विमोचन के प्रसाद। फिर वास्तु के लिए प्रसाद और फिर कर्म विमोचन के 27 प्रसाद, जिनमें वैयक्तिक कर्म विमोचन के 9 प्रसाद 9 हफ्तों के होते थे। फिर ऋणविमोचन और दीक्षाएँ।

प्रसाद पूजन, विमोचन और दीक्षाओं के अनुसार अलग–अलग संकल्प प्रार्थना। शुरूआत की प्रार्थना में "मैं (अपना पूरा नाम) खुद का नाम, पिताजी का नाम, उपनाम, अपना गौत्र और शाखा, फिर – ऐसी प्रार्थना कर रहा हूँ कि .....।

जैसे विमोचन शुरू हुए, कुल देवताओं के प्रसाद लेकर हम गुरूमार्गी हो गए, तो गौत्र बन गया गुरू (श्री साईनाथ)। फिर खानदान को कृपाशिर्वाद मिला तो शाखा (यानी एक धर्म मानवता) भी चली गई। फिर संकल्प प्रार्थना में, मैं (अपना नाम, पिताजी का नाम और उपनाम) ऐसी प्रार्थना कर रहा हूँ कि ......।

फिर वंश विमोचन सिद्ध होकर कार्यान्वित हुआ तो उपनाम और पिताजी का नाम अगले संकल्प से निकाला। फिर, सिर्फ, मैं (अपना नाम) ऐसी प्रार्थना कर रहा हूँ कि .....। फिर कर्म विमोचन/वैयक्तिक कर्म विमोचन को साधना सिद्ध होकर कार्यान्वित हुआ तो संकल्प प्रार्थना से अपना नाम भी हटाया, सिर्फ, "मैं, ऐसी प्रार्थना कर रहा हूँ कि .....।"

आगे वं. दादा जी ने दीक्षाएँ दी, शक्तिपीठ की स्थापना की और प्रतिमाओं की सिद्धता की इसलिए अब संकल्प प्रार्थना की शुरूआत हो गई। "आम्ही गुरूभक्त.....। शक्तिपीठ प्रार्थना वही संकल्प प्रार्थना है। श्री गुरू हमारे कुलदेवता हो गए। उन्होंने शक्ति के एक हिस्से का उपयोग हमारी तकलिफें दूर करके हमें सुख–शांति–समाधान

प्राप्त हो इसलिए किया और मूलभूत ब्रह्माण्ड शक्ति को आकार देकर उसे शक्तिपीठ में स्थित किया। इस शक्ति को कार्यान्वित करने के लिए भी सभी भक्तों को साधन सिद्ध करके दिया – ऊँकार साधना और संकल्प प्रार्थना दी जिससे "मानवी जीवन ईश्वरमय हुए"।

यह साध्य होने के लिए, भक्तों का विकास होने के लिए विमोचन, दीक्षाएँ, निराकरण और निवारण यह साधना आरती साधना, मुलाकात साधना और दैनंन्दिन प्रार्थना में समाये। इसीलिए दैनंन्दिन प्रार्थना ऊँकार साधना के बाद या आरती साधना के बाद सामुहिक पद्धति से कहने के लिए कहा गया।

इस दैनंन्दिन प्रार्थना से भक्तों का और उनके कुटुम्ब का विमोचन शुरू होकर उनके माध्यमों का विकास होने लगता है।

समय के अनुसार आज भी संकल्प प्रार्थना सेवक माध्यम का विकास करने के लिए दी जाती है। यह होने वाला विकास, उस सेवक माध्यम के या किसी और व्यक्ति के हाथों में नहीं है, तो सिर्फ गुरूशक्ति से वह हो सकता है। इसी प्रेरणा से यह गुरू कार्य जगत के अन्त तक चलेगा और यही दैनंन्दिन प्रार्थना आगे चलकर सभी धर्मों और समाज में कार्यान्वित होगी। ऐसा गुरू का वचन है। ऐसी विभूतियों का वचन है और इस वचन का पालन करना आज हम सभी का तथा समाज का कर्त्तव्य, धर्म है। यह कर्त्तव्य करने के लिए वं. दादा, परम् पूज्यनिय बाबा और अन्य दिव्य पुण्य विभूति हम सभी को शक्ति दे, यही उन्हीं के चरणों में विनम्र प्रार्थना।

"दैनंन्दिन प्रार्थना"

हे भगवान! हमारे परिवार के उद्धार के लिए जो महान विभूतियाँ स्वयं कष्ट सहकर भी हरपल जूझ रही है, उनके उपदेशों तथा आदेशानुसार हमारा आचरण पवित्र हो, ऐसी कृपा कीजिये।

अब तक हमारे द्वारा किये गये पापों तथा प्रमादों की पुनरावृत्ति न हो।

विकट, आर्थिक तथा अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परेशान होकर तथा क्षुद्र मनोविकारों के अधिन होकर, अथवा संकुचित विचारों से वशीभूत होकर, हमारे मन में आलस्य अथवा अज्ञानवश उनके प्रति अयोग्य विचार आये हों, अथवा अयोग्य विचार हमारे मुँह से निकले हों, अथवा उनके आदेशों के विपरीत कोई कार्य हुआ हो तो उसके लिए, उन सबके प्रति मैं आपका तथा उन सबका निस्पृह भाव से क्षमा चाहता/चाहती हूँ।

हमारे परिवार में सदा सुख, शांति, सन्तोष तथा एक दूसरे के प्रति ममता और आनन्द हमेशा बना रहे।

उसी प्रकार आपके प्रति अटूट श्रद्धा हम सबके हृदय में सदा जागृत रहे। उन्होंने सोचा हुआ महान कार्य, हम अपने शेष जीवन में पूरा करने में यशस्वी हो सकें तथा अन्य भी अनेक सद्कृत्य करते रहें। इस प्रकार वे महान, दिव्य आलौकिक विभूतियाँ हम पर सदा खुश रहें तथा हमारे परिवार पर आपकी भी कृपादृष्टि इसी तरह बनी रहें।

हे प्रभु! हमारे परिवार के सभी सदस्यों को अपना–अपना कर्त्तव्य–कर्म निभाने की बुद्धि दीजिए।

पूर्व जन्मों के सद्कर्मों के अनुसार यद्यपि हममें से कुछ व्यक्ति आज सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, फिर भी "अगले जन्मों की चिन्ता मनुष्य को इसी जन्म में करनी चाहिए" अपने इस पवित्र वचन से आपने संसार को जो पाठ पढ़ाया है, उसके अनुसार व उपकारों को बदला अपकारों से न हो ऐसी बुद्धि, हे दयानिधान, परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को आप दीजिये, केवल इतनी ही दुआ, आपके चरणों में अत्यन्त दीन भाव से मांग रहा/रही हूँ।

I Pray to Thee, most humbly, O' Almighty God, to shower your kind blessing on me and all members of my family so that we lead a life worthy of your glory. I seek you guidance as also that of other Holy Spirits to enable us to perform our right duties. May Your Grace permeate our thoughts, speech, actions, conduct and disposition.

O' Master, let purity be the hallmark of our life. Give us strength to earn merit through benevolence. Pordon us for all our past evil thoughts, utterances and deeds. I pray to The to dispel covetousness from our minds so that we do not hate other or envy their riches and prosperity which they might be enjoying due to their past merit. May we tread the path of righteousness.

O' God may our households be filled with peace and happiness. Let humility triumph over conceit and egotism. Let gratitude be not paid by ingratitude. This Prayer, I make at you Sacred feet, My Lord, as a provision for a more purposeful life.

।। शुभ्म भवन्तु ।।
जन्मों का सेवक
श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

foue fuonu

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible